पविकेरिप भूडपते || Spr. 677. 4677. — 2) Etwas (acc.) zu geniessen so v. a. zu büssen haben bei Jmd (gen.), den Lohn für Etwas (acc.) davontragen; act.: मा व एने। म्रन्यकृतं भ्रेम RV. 6,51,7. 7, 52,2. 4,3,13. मा तु र्नस्वते। यतिन्भुजेम ७,८८,६. मा कस्य यत्तं भुजेमा तन्भिः ५,७०,४. भुनन्त्र्येकः (Conj. für भुज्जत्येकः) श्रभाश्रभम् Spr. 4059. med.: यस्यां यस्या-मबस्याया यत्करे।ति शुभाशुभम्। तस्यां तस्यामबस्थायां भुङ्के बन्मनि बन्म-नि ॥ MBn. 13,347 (vgl. Spr. 4864). स्वानि पुरायानि भुज्ञानाः R. 2, 27, 4. स पापं केवलं भुङ्के Mark. P. 29, 31. pass.: कृतं फलित सर्वत्र नाकतं भुष्यते क्रचित् Spr. 5077. Mit instr. der Sache: मार्ह राजनन्य-क्तिन भोजम् R.V. 2,28,9. — 3) act. Imd (acc.) zu Nutzen sein, zu Gute kommen, frommen, dienen: तान भ्निक्त श्रृतं तत् Nia. 2, 4. RV. 10,89, 17. न हैव तखजमानं भनिक्त Air. Br. 3,46. यज्ञी सर्वाणि भतानि भनिक्त Çar. Br. 9,4,1,11. 1,2,17. लाकः पच्यमानश्चतुर्भिर्धर्मैर्त्रात्सागं भुनिक्त 11, ४,२,। यया क् वै वक्वः पश्चो मनुष्यं भुङ्युरेवमे कैकः पुरुषो देवान्भनिक्त 14.4,2,22.28. 2,26. मुझत्येनं विड्पतिष्ठते TS. 2,1,4,8. किं मी मुझ्याः wozu kunnst du mir dienen? 4,12, 6. TBR. 3,7,6,1. KATHOP. 6,19 TAITT. Up. 2, 1. KAUSH. Up. 4, 20 (v. l. med.). 451 in dieser Bed. wird von den Commentatoren durch पालप् erklärt, womit zu vergleichen ist, dass nach P. 1, 3, 66 মুব্ৰ im med. gebraucht wird, wenn es eine andere Bedeutung als মূলন hat. Für diese letzte Bed. führt aber der Schol. das Beispiel मर्की भ्नांक्त auf; vgl. Vop. 23,49. — 4) in der Astr. durchlaufen, mit dem acc.: (प्रकाः) भानि भुझते Sûrjas. 1,26. 12,76. fg. Webrk, Gjot. 42. यावनभामाउलं भुज्जीत Внас. Р. 5,22,7. म्रर्कस्य संव-त्मर्भाताम् 8. act. Schol. zu Sürjas. 1,26. 3,64. भृता Sürjas. 3,45. 49. Webku, Gjot. 21. 112. मृता: काल: die durchlaufene —, verlebte —, abgelausene Zeit Raga-Tan. 1, 50. त्रसरेगात्रिकं भुङ्के यः कालः सा त्रिटः स्यात् durchlausen, erfüllen Bulg. P. 3,11,6. यो (कालः) भुङ्के परमाण्-ताम् 4. स्वं स्वं कालं मन्भ्ङ्के साधिका खेकसप्ततिम् 23. (कल्पः) भुञ्ज-न्मन्द्रश so v. a. währt ebend. — In der folgenden Stelle ist eine Verwechselung zwischen भूज् und युज् (vgl. weiter unten u. उप) anzunehmen: निर्वेदस्तु न कर्तव्यो भुज्ञानेन (lies युज्ञानेन; der Schol. erganzt यागैश्वर्यम् zu भ्जानेन) कवं च न MBu. 14, 562. — Vgl. श्रभुज्ञल्, भुक्त, भुक्ति, भुतिष्य, भाक्त्रू, भाक्तव्य, २. भाग, भाग्य, भातक, भातन, भा-त्रिन्, भोज्यः

— caus. act. 1) भाजपति (P. 1,3,87. Vop. 22,2) Ima Etwas essen lassen, speisen mit; mit doppeltem acc. (P. 1,4,52. Vop. 5,5) oder mit acc. der Person und instr. der Sache. Kåtj. Çr. 4,6,10. 25,8,1. सर्पिमंधु-भ्यामृत्विज्ञा भाजपत् Låtj. 3,6,8. ऋत्विज्ञा ब्रह्मीदनं भाजपित्रा 9,9,8. Kauç. 6. 17. 24. 43. 61. Åçv. Grhj. 1,22,18. 2,3,13. Pår. Grhj. 2,2. विष्यप्रदेश भाजपत् М. 3,112—114. 125. 129. Jåén. 1,108. MBH. 1,4965. 4,539 (पात्रोक्सा — भाजपत्युत mit der ed. Bomb. zu lesen). 595. Hariv. 9753. Daç. 2,33. R. 2,61,12. Kathås. 36,22. Pankár. 3,14,24. Råéa-Tar. 1,164. Bhåg. P. 7,15,3. Pankár. 26,20. Çuk. in LA. (II) 34,19. न व स्वयं तद्भीयाद्तिय्यं यत्र भाजपत् Spr. 4355. MBH. 14,1852. R. 3,16,15. स्वाड च भाजिता Kathås. 21,51. Bhåg. P. 9,4,34. Pankár. 1,6,52 (नार्दं st. नार्द् zu lesen). दिज्ञाते: संस्थितस्य तु । खेदैवं भाजपेच्छ्रा-द्यम् М. 3,247. क्यान् — ऋभाजपन् — भाजपन् R. 2,91,53. fg. (100,52 Gorr.). भाजपेन् — ऋनायोनासक् स्तान् М. 3,233. МВН. 3,1007. Varån.

Ввн. S. 46,32. Рамкат. 121,12. Hrr. 25,16, v. l. 31,21. भाजपते (ohne Ergänzung) aus metrischen Rücksichten (भुजापपति v. l.) Spr. 1103. Jmd Etwas geniessen lassen: (दंपती) भागानिष्टान् — भाजपामास ад Месн. 113. भाजपिष्यामि भवतीं भुवनत्रयम् Внатт. 8,83. Vgl. भाजनीय. — 2) भुजापपति Spr. 1103, v. l.

- desid. zu essen wünschen, hungrig sein: स्रत्नं वुभुत्तमाण: МВн. 13, 5009. राजन्मे रीयतामत्नं सगणाय वुभुत्तते Внас. Р. 9,21,8. zu geniessen wünschen: न स राड्यं वुभुत्तित МВн. 1,5667. Vgl. वुभुत्ता, वुभुतित (auch Nis. 7,13. Suçs. 1,242,1. 244,15. Рамбак. 4,3,202), वुभृत्त.
- intens. बोमुड्यते mit pass. Bed. vielfach verspeist werden: बोमु-इयते ऽतिथिमुक्तत्स्वज्ञनै: सक्तज्ञम् VARAH. Bah. S. 19,18 (पेपीयते ebendas. ist gleichfalls pass.; hiernach sind u. 2. पा intens. die Worte «mit pass. Bed.» eine Zeile höher vor पेपीयते zu stellen).
- म्रधि verspeisen: म्राह्मानि ना ४धिवुमुत्ते प्रसमं तनूर्त्रीर्र्त्तानि (Worte der Manen) Bulg. P. 7,8,44. geniessen: म्रधिमुज्यमानम् रिक्यं पितृपै-तामरूम् Bulg. P. 5,7,8. राज्यमिदं स्वेच्क्याधिभुज्यताम् (उपभुज्यताम् v. 1.) Hir. 130,4.
- श्रन् 1) den Lohn für Etwas (acc.) geniessen: एको उनुभुङ्क सुज्ञानम् तमकः एव च डब्कृतम् Spr. 3822. 2) geniessen: इर्विनयवृत्तपत्तमनुभुङ्क Рамкат. 259, 15. भागान् Buåg. P. 7, 10, 10. श्रन्वभुङ्क चन्द्रिज्ञाम्
 RAGH. 19, 39. मएडनान्मएडनमन्वभुङ्क sie ward eines Schmuckes nach
 dem andern theilhaftig Kumåbas. 7, 5. 3) durchlaufen (in astr. Sinne):
 (श्रङ्गार्कः) त्रिभिक्तिभिः पत्ते रिकेकशो राशीन्दार्शानुभुङ्के Вийд. Р. 5, 22, 14.
- म्रभि Jmd (acc.) nützlich sein, dienen: इमे लोका म्रन्योऽन्यमिभु-ज्जिति Çiñkh. Ça. 16,21,21.
 - म्रा s. म्राभागि und vgl. म्राभाजिन in भुजगाभाजिन.
- उप 1) geniessen, essen, verspeisen, verzehren: पद्या कर्याचित्य-एउना चलारिंशच्क्तदयम् । मासेनैवापभृञ्जीत अदेवंत ३,३२५. रसायनम् Spr. 2951. तान्मतानपि ऋट्यादाः कृतघान्नोपभुञ्जते 5124. घतं मध् पप-स्ताेपं द्धीनि रसवित च। फलं मूलं च सस्वाड दिजास्तत्राप्भुञ्जते ॥ мвн. 7,2311. Harry. 7839. R. 2,30,16. 61,5 (med. ed. Bomb.). तात्पा: संत-सा नापम्झत essen nicht 114,12. R. Gorn. 2,55,19. Ragh. 2,65. Bhatt. 8,40. सा (मार्जारः) ४घ डिपिडकं (मूषिकं) ऋषभुक्तवान् MBn. 5,5443. 13, 227. Макк. Р. 23,72. पपः पूर्वैः स्विनश्चासकावान्तम्पभुत्यते Rлы. 1,67. Spr. 3848. Ràga-Tar. 1,217. Mark. P. 14,85. Hir. 122,15. ऋधापमक्तन विसेन Кимаяль. 3,37. Рамкат 104,6. लङ्गत्रासंघातखुरायाङ्कनखतता। पिं तस्याभवड्मिक्रपभृत्रेव भूपतेः ॥ wie verzehrt Katulis. 18,7. म्राश्या संचितं द्रव्यं कालेनेवापभुव्यते MBs. 13,7592. मन्पभुव्यमानश्च निष्प्रयोजन एव सः (मर्थः) Ніт. 46,8, v. l. तपसाम्पभुज्ञानाः फलानि geniessend Kuма̀ваs. 6,16. भागम् Катиа̀s. 28,118. Рам́кат. 130,21. विषयान् Spr. 1632. पित्रा दत्तं यद्याभागम्पभाक्तं त्वमर्रुसि R. 2,101, 26. fg. Kathås. 38, 36. Вийс. Р. 7,14,7. युष्मदायत्तं राज्यमिदं स्वेच्क्योपभुज्यताम् Ніт. 130,4, v. l. पाएडवेपानि रत्नानि तमस्याप्युपभुञ्जसे MBH. 3,15118. HARIV. 7193 (act.). उपभोद्यामि तद्दनम् ८२७७. नान्यापभुक्तनवर्षावनभारमारा 🛣 🗸 ३३. र्-तन्नीडासुखम् Kathas. 45,181. द्व:खम् R. Gorr. 2,34,25. Mark. P. 21, 40. लोकानुपभोद्यसि पुष्कलान् MBn. 1,8343. मम प्रभावाञ्च गवामप्ता-न्युपभाद्यय Навіч. 3881. तितिपति रूपभुङ्के त्रिवर्गं चिराय Катна́в. 13,95. पानशय्यासनान्यस्य कूपोध्यानगृक्षाणि च । म्रद्त्तान्युपभुञ्जानः benutzend,